❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

सुशील राज आर्य प्रतिभा विकास संस्थान
द्वारा
संघ लोक सेवा आयोग की
सिविल सेवा परीक्षा IAS / IPS / IRS etc..
की उत्तम तैयारी हेतु
आर्य प्रतिभा छात्रवृत्ति परीक्षा
आवेदन की अंतिम तिथि – 30 जून 2025
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
9311721172 E-mail: dss.pratibha@gmail.com

वर्ष 48, अंक 33 | एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 9 जून, 2025 से रविवार 15 जून, 2025

विक्रमी सम्वत् 2082 | सृष्टि सम्वत् 1960853126

दयानन्दाब्द : 202 | पृष्ठ : 8

वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150

ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से आर्यवीर दल प्रदेश के तत्वावधान में

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर दीक्षान्त समारोह सम्पन्न

तेज हवा-वर्षा के बीच डीएवी स्कूल पुष्पांजलि एंक्लेव पीतमपुरा में दिखा शिविरार्थियों मे अपार उत्साह

भारत का स्वर्णिम भविष्य है आर्यसमाज की युवा पीढ़ी – आर्य वीर दल – सुरेन्द्र कुमार आर्य, चेयरमैन, जेबीएम

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के पथ पर आगे बढने का संकल्प लें आर्यवीर – एस.के.शर्मा, महामन्त्री प्रदेशिक सभा

अमर बलिदानियों के जीवन चरित्रों से प्रेरणा लेकर राष्ट्रभक्ति के पथ पर बढ़े युवा शक्ति – डॉ. योगानन्द शास्त्री

युवा शक्ति के सर्वांगीण विकास हेतु निरन्तर आवश्यक हैं ऐसे रचनात्मक शिविरों के आयोजन – धर्मपाल आर्य, सभा प्रधान

आर्यवीर दल की शाखाओं का प्रत्येक आर्य समाज में करें नियमित संचालन – विनय आर्य, सभा महामन्त्री

विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाना, कठिन से कठिन चुनौती का डटकर सामना करना, धैर्य और साहस को हर स्थिति, परिस्थिति में बनाए रखना, अपने लक्ष्य और उद्देश्य के प्रति समर्पित रहना, उचित और अनुचित का भेद समझना, धर्म, संस्कृति और संस्कारों का पालन करना, मानव सेवा, राष्ट्र निर्माण, यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग में रुचि रखना आदि शुभगुण आर्य वीरों के आभूषण हैं। 1 जून 2025 को आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा डीएवी पब्लिक स्कूल, पुष्पांजलि एंक्लेव में आयोजित प्रांतीय शिविर के समापन एवं दीक्षांत समारोह में उपरोक्त उदाहरण पूरी तरह से चरितार्थ हुआ। शिविर का शुभारंभ 22 मई 2025 को आर्यनेता ठाकुर विक्रम सिंह जी की अध्यक्षता में विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति में हुआ, इसके बाद लगातार सैकड़ों शिवरार्थी तेज गर्मी के बीच पूरी निष्ठा से सुबह 4 बजे से लेकर रात्रि 10 बजे तक योगासन, व्यायाम, लाठी, संध्या, हवन, भाला, जूडो कराटे, मलखम, तलवार, कला कौशल, व्यक्तिव विकास और आपदा प्रबंधन तथा राहत बचाव जैसी उपयोगी शिक्षाओं को सुयोग्य शिक्षकों के निर्देशन में सीखा। लेकिन जब प्राप्त शिक्षाओं का प्रदर्शन करने का समय आया तब उसी समय तेज हवा के साथ वर्षा आरंभ हो गई। लेकिन आर्य वीर दल के अधिकारियों, शिक्षकों और शिवरार्थियों की सूझ-बूझ, धैर्य एवं साहस से विपरीत बनी परिस्थितियां भी अनुकूल हो गई, कार्यक्रम एक घंटे विलंब से प्रारम्भ होने पर भी भव्य समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ।

आर्य वीर दल दिल्ली के आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर के दीक्षान्त समारोह पर ध्वजारोहण करते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी की अध्यक्षता में शिविर के समापन समारोह का कार्यक्रम ध्वजारोहण से प्रारंभ हुआ, इस अवसर पर श्री योगानंद शास्त्री, पूर्व अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा, श्री एस के शर्मा, महामंत्री, प्रादेशिक सभा, श्री सुरेंद्र रैली, प्रधान आर्य केंद्रीय सभा, श्री उपेंद्र अहलावत, श्री विनय आर्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा, श्री सतीश चडडा, श्री हरिओम बंसल, श्री वीरेंद्र सरदाना, श्री जोगेन्द्र खटटर, श्री हर्षप्रिय आर्य, श्री वीरेंद्र आर्य, श्री प्रवीण बत्रा, श्री रविकांत, स्कूल की प्रधानाचार्या जी, दिल्ली के वेद प्रचार मंडलों के अधिकारी, विभिन्न आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, सदस्य और अभिभावकगण एवं अनेक अन्य महानुभावों की उपस्थिति प्रसंसनीय रही, श्रीमती शारदा आर्या, श्रीमती विभा आर्या आदि भी उपस्थित रहे।

दीक्षान्त समारोह में शिविरार्थियों को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के साथ मानव सेवा एवं राष्ट्र निर्माण का संकल्प ग्रहण कराते आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री एस. के. शर्मा जी साथ में आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश के महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य।

– शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर उत्साह के साथ करें योग कक्षाएं, योग चर्चा, आसन, प्राणायाम, व्यायाम का आयोजन

विश्व की समस्त आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, गुरुकुलों, विद्यालयों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के 11वें आयोजन 21 जून 2025 के अवसर पर सार्वजनिक स्थलों, सत्संग हॉल, पार्क, सामुदायिक भवन इत्यादि में सामूहिक रूप से- 1. योग कक्षाएं 2. योग के सम्बन्ध में वैदिक चर्चा 3. आसन 4. व्यायाम 5. प्राणायाम 6. सूर्य नमस्कार आदि यौगिक क्रियाओं का अनिवार्य रूप से आयोजन करें व अपने क्षेत्र के जन साधारण को आमंत्रित करके योग को अपनाने की अपील एवं संकल्प कराएं।

निवेदक

सुरेशचन्द्र आर्य (प्रधान)
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामन्त्री)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सुरेन्द्र रैली (प्रधान), सतीश चड्डा (महामन्त्री)
आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य

देववाणी-संस्कृत

परमेश्वर का मन्यु

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः।।
-ऋ॰ 8।6।4 ; साम॰ पू॰ 2।1।5।3 ; अथर्व॰ 20।107।1
ऋषिः-**काण्वो वत्सः**।। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**गायत्री**।।

शब्दार्थ - **अस्यअ** = इस परमेश्वर की **मन्यवे** = मन्यु 'क्रोध', दीप्ति के सामने **विश्वा विशः** = सब प्रजाएँ **कृष्टयः** = सब मनुष्य **सं नमन्त** = ऐसे झुक जाते हैं **समुद्राय इव सिन्धवः** = जैसेकि नदियाँ समुद्र में समा जाने के लिए उधर स्वयं बही जाती हैं।

विनय- इन्द्र परमेश्वर जहाँ हमारे पिता हैं, उत्पादक और पालक हैं, वहाँ वे हमारे कल्याण के लिए रुद्र भी हैं, संहारकर्त्ता भी हैं। जब जगत् में किसी स्थान पर संहार की आवश्यकता आ जाती है तो प्रभु अपने मृत्यु को प्रकट करते हैं, मानों अपना तीसरा नेत्र खोल देते हैं, अपने तीसरे, रूप में प्रकाशित करते हैं। उस कल्याणकारी शिव के मन्यु का तेज जब देदीप्यमान होने लगता है तो नाश होने योग्य सब संसार पतङ्गे की भाँति आ आकर उसमें भस्म होने लगता है; मन्यु का पात्र कोई भी व्यक्ति का व्यक्ति बच नहीं सकता, सब बहे चले आते हैं देखो, समय-समय पर बड़े-बड़े संग्राम, दुष्काल या महामारी आदि रूपों में प्रभु का वह महाबलवाला मन्यु जगत् में प्रकट होता है। सब मनुष्य अपने विनाश की ओर खिंचे चले जा रहे होते हैं, पर उन्हें यह मालूम नहीं होता। जैसे सब नदियाँ समुद्र की ओर बही चली जा रही हैं व उसमें जाकर समाप्त हो जाएँगी, उसी प्रकार प्रभु का मन्यु काल-समुद्र बनकर उन सब प्राणियों को अपनी ओर खींचता जा रहा है, जिनका कि समय आ गया है। मनुष्यों के किये हुए पाप उन्हें विनाश की ओर वेग से खींचे ले-जा रहे हैं। जिन्होंने इस संसार को तनिक भी तह के अन्दर घुसकर देखा है, वे देखते हैं कि किस-किस विचित्र ढङ्ग से मनुष्य अपने मृत्युस्थल की ओर खिंचे चले जा रहे हैं। धन्य होते हैं अर्जुन-जैसे दिव्य दृष्टिपात पुरुष जिन्हें काल का यह आकर्षण दिखाई दे जाता है और जो देखते हैं कि "**यथा नदीनां बहवाऽम्बुवेगाः समुद्रमेंवाभिमुखा द्रवन्ति। तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।।**"

हम लोग तो मौत के मुँह में घुसे जा रहे होते हैं, परन्तु कुछ पता नहीं होता। हममें से अपनी शक्तियों का बड़ा गर्व करने वाले बड़े-बड़े प्रख्यात लोग जिस समय संसार को जितने अभिमान के साथ अपना पराक्रम दिखा रहे होते हैं, उसी समय वे उतने ही वेग से मृत्यु की ओर दौड़े जा रहे होते हैं; परन्तु उन्हें कुछ पता नहीं होता। जब उनका सब ठाठ एक क्षण में गिर पड़ता है, सामने मौत खड़ी दीखती है, तब जाकर प्रभु का रुद्ररूप उन्हें दीख पड़ता है। प्यारों! तब तुम अभी से क्यों नहीं देखते कि उसके मन्यु के सामने सब संसार झुका पड़ा है- पापी होकर कोई भी मनुष्य उसके सम्मुख खड़ा नहीं रह सकता- जिससे तुम अभी से उसके मन्यु का पात्र न बनने की समझ पा सको।

वेद-स्वाध्याय

-: साभार:-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

राजा का कातिल पत्नी सोनम या उसका राज?

ऐसे कत्ल समाज पर धब्बा है

सोनम की गिरफ्तारी के बाद 17 दिन चले कयास, आशंका, कहानी और किस्से सब पलट गए। 11 मई 2025 को सोनम और राजा रघुवंशी परिणयसूत्र में बंधे थे। जीवन के एक नए अध्याय की शुरुआत करने के लिए शादी के बाद नंबर आया हनीमून का, तो सोनम को मेघालय देखना था और राजा को अपनी पत्नी की सारी बात माननी थी। शादी के केवल 9 दिन बाद ही नया जोड़ा हनीमून के लिए मेघालय रवाना हो गया। दिलचस्प बात यह है कि हनीमून की पूरी प्लानिंग सोनम ने खुद की थी। टिकट से लेकर होटल बुकिंग तक सब कुछ सोनम के नाम से हुआ।

राजा और सोनम मेघालय के शिलांग में नोंग्रियाट गांव घूमने गए। घर परिवार से फोन पर बात हुई, सब कुछ ठीक था। यहाँ तक कि ये कहानी सिर्फ दो परिवारों को पता थी। कुछ राजा के दोस्त और सोनम के खास ही इस हनीमून ट्रिप को जानते थे लेकिन यहाँ से आगे क्या हुआ कि कहानी देश के अखबारों की सुर्खियां बन गई 23 मई को सोनम और राजा ईस्ट खासी हिल्स में लापता हो गए, देश भर में खबर चली कि शादी के बाद मेघालय घूमने गया कपल लापता फिर न राजा का पता चला, न सोनम का। परिवार परेशान हो उठा। अगले दिन उनकी किराए की स्कूटी सोहरा के पास एक सुनसान जगह पर लावारिस हालत में मिली। यही वह पहली कड़ी थी जिसने पुलिस को मामले की गंभीरता का अहसास दिलाया। लापता कपल्स का केस दर्ज किया गया।

सवाल उठाए जाने लगे पर्यटकों की सुरक्षा के, सवाल उठे नॉर्थ ईस्ट के राज्यों के लोगों पर, सवाल पूछे जाने लगे मेघालय की सरकार से। कुछ ने कहा हनीमून पर ही नहीं जाना चाहिए, तो कुछ ने कहा सुरक्षित जगह जाना चाहिए। एक सपनों भरा हनीमून, जो खुशियों का प्रतीक होना चाहिए था, एक भयानक त्रासदी में बदल गया। इस मामले ने न केवल मेघालय पुलिस बल्कि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की पुलिस को भी जांच में शामिल होना पड़ा।

मेघालय पुलिस अपना काम करने लगी, स्थानीय लोगों से पूछताछ की गई , कपल्स के फोटो से उनकी जानकारी मांगी गई, होटल्स के रिकॉर्ड खंगाले जाने लगे, सीसीटीवी चेक होने लगे और 2 जून को राजा का शव एक गहरी खाई में मिला। शव की हालत बुरी तरह खराब थी। पहचान करना मुश्किल था। लेकिन राजा के हाथ पर गुदा 'राजा' टैटू ने उसकी पहचान पक्की कर दी।

पोस्टमार्टम में हत्या की पुष्टि हो गई। राजा की मौत सिर में गहरी चोट और धक्का देने से हुई थी। गले से चेन और हाथों से अंगूठी गायब थी। कहानी बनी कि किसी ने लूटपाट के लिए राजा की हत्या कर दी और सोनम को अगवा कर लिया।

उधर मेघालय पुलिस की जांच दूसरे एंगल से चल रही थी। राजा का शव मिलने के बाद सोनम का गायब रहना मेघालय पुलिस के शक को पुख्ता करता गया। वे उसका फोटो सीधे एंगल से देखते रहे, आस-पास के सीसीटीवी चेक होने लगे, मोबाइल लोकेशन ट्रेस होने लगी। तीन चेहरे सामने आने लगे: एक आकाश राजपूत,

राजा और सोनम मेघालय के शिलांग में नोंग्रियाट गांव घूमने गए। घर परिवार से फोन पर बात हुई, सब कुछ ठीक था। यहाँ तक कि ये कहानी सिर्फ दो परिवारों को पता थी। कुछ राजा के दोस्त और सोनम के खास ही इस हनीमून ट्रिप को जानते थे लेकिन यहाँ से आगे क्या हुआ कि कहानी देश के अखबारों की सुर्खियां बन गई, 23 मई को सोनम और राजा ईस्ट खासी हिल्स में लापता हो गए, देश भर में खबर चली कि शादी के बाद मेघालय घूमने गया कपल लापता फिर न राजा का पता चला, न सोनम का। परिवार परेशान हो उठा। अगले दिन उनकी किराए की स्कूटी सोहरा के पास एक सुनसान जगह पर लावारिस हालत में मिली। यही वह पहली कड़ी थी जिसने पुलिस को मामले की गंभीरता का अहसास दिलाया। लापता कपल्स का केस दर्ज किया गया।

दूसरा आनंद कुर्मी और विशाल सिंह चौहान।पता चला कि ये तीनों राजा रघुवंशी और सोनम के दाएं-बाएं घूमते रहे। मेघालय पुलिस का जब शक पुख्ता हो गया, उसने मध्य प्रदेश पुलिस की सहायता लेकर इन्हें पूछताछ के लिए शिलांग ले गई, तो अचानक सारा मामला साफ हो गया। पिछली बनी सुनी सारी कहानियों पर पानी फिर गया और नई कहानी सामने आई। पता चला कि आकाश, आनंद और विशाल को किसी राज कुशवाहा ने 50 हजार रुपये और एक फोन देकर पहले ही इंदौर से सड़क मार्ग से भेज दिया था। 20 को फ्लाइट से सोनम और राजा गुवाहाटी पहुंचे और 21 को शिलांग। जो मोबाइल तीनों किलर के पास था, सोनम बराबर उस नंबर से संपर्क में रही। जहां भी जाती, उन्हें अपनी लोकेशन भेज देती। हर जगह पर उनकी मौजूदगी थी। आखिरकार 23 को उन्हें मौका मिला और राजा का काम तमाम कर दिया।

जब इन्हें पक्का हो गया कि राजा मर चुका है, ये तीनों फिर रेल और सड़क मार्ग से होते हुए वापस इंदौर चले आते हैं। इसके बाद सोनम भी मेघालय छोड़ देती है और बिहार आ जाती है। बिहार में किसी लोकल सपोर्ट के पास रुकती है। उसके अपहरण की खबरें चलती रही लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ रहा था। लेकिन जब उसे पता चला कि तीनों किलर पकड़े गए, तो अचानक नई कहानी शुरू हो जाती है।

रात 1 बजे रोती हुई सोनम उत्तर प्रदेश के गाजीपुर ढाबे पर पहुंची और बोली, "घर पर बात करनी है।" ढाबा कर्मचारी ने कॉल करने की इजाजत दे दी। फोन पर बात के बाद होटल स्टाफ ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस पहुंची, सोनम को अरेस्ट किया।

- शेष पृष्ठ 7 पर

150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष पर विशेष

आर्यसमाज द्वारा किये गये 150 ऐतिहासिक कार्य

यह लेख आचार्य राहुलदेव जी द्वारा समस्त जन साधारण, आर्यजनों एवं सुधीपाठकों की जानकारी एवं ज्ञानवर्धन के लिए प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में आर्यसमाज के 150 वर्षों के इतिहास में आर्यसमाज द्वारा किए गए 150 ऐतिहासिक कार्यों को उद्धृत किया गया है, जिसका आप भी अपने स्तर पर सोशल मीडिया तथा अन्य संसाधनों से प्रचार कर सकते हैं। - सम्पादक

1. विधवा विवाह का प्रावधान किया और इसकी शुरुवात आर्यों ने अपने घर में विधवा बहुएँ ला करके उदाहरण उपस्थित किया।
2. आर्यसमाज ने बहु विवाह को अवैदिक बताया और इसे स्त्री समाज के विरुद्ध सिद्ध किया।
3. आर्यसमाज ने बाल विवाह का प्रतिरोध किया परिणाम स्वरूप अंग्रेजों को परतन्त्र भारत में विवाह की आयु का कानून बनाना पड़ा।
4. आर्यसमाज ने परतन्त्र भारत में सर्वप्रथम कन्याओं के लिए विद्यालय खोले और विरोध होने पर अपनी बेटियों का प्रवेश करवाया।
5. आर्यसमाज ने स्त्री शिक्षा को अनिवार्य बताया, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए स्त्री शिक्षा की पुरजोर वकालत की।
6. आर्यसमाज ने कन्याओं के लिए परतन्त्र भारत में गुरुकुल खुलवाए और विधर्मी होने से हिन्दू समाज की बेटियों को बचाया।
7. आर्यसमाज ने सती प्रथा को अमानवीय बताया और विधवाओं को जीने का अधिकार दिलवाया।
8. बाल विधवाओं के पुनरुद्धार के लिए आर्यसमाज ने सामाजिक लडाईयाँ लड़ी।
9. बाल विधवाओं की शिक्षा, समाज में उनकी प्रतिष्ठा और उनके पुनर्विवाह के लिए न्यायिक प्रयास किए।
10. स्त्रियों को पर्दा प्रथा से निकालकर, शिक्षा, राजनीति और सामाजिक कार्यों में उनकी भूमिका के लिए संघर्ष किया।
11. स्त्रियों को नर्क का द्वार बताने वालों को सैद्धान्तिक रूप से पराजित किया। और उन्हें स्वर्ग प्रदात्री बताया।
12. आर्यसमाज ने स्त्रियों को पैर की जूती बताने वालों के मुंह पर तमाचा मारा और बताया कि स्त्रियाँ तो सिर की ताज होती हैं।
13. आर्यसमाज ने स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार दिलाया। उनके लिए गुरुकुल खोलकर वेद पढवाया और आज भी पढ़ा रहे हैं।
14. आर्यसमाज ने स्त्रियों को गायत्री मंत्र बोलने, पढ़ने और जपने का अधिकार दिलाया।
15. आर्यसमाज ने स्त्रियों को कर्मकांड करवाने का अधिकार दिलाया और उन्हें वेदों की विदुषी बनाकर यज्ञ में ब्रह्मत्व के आसन पर प्रतिष्ठित किया।
16. आर्य समाज ने संतानों के निर्माण के लिए 'माता निर्माता भवाति' के उद्घोष के साथ माता को सबसे पहला शिक्षक बताया।
17. आर्यसमाज ने परतन्त्रता के बाद सर्वप्रथम स्त्रियों को व्यासपीठ पर बैठाया और उनको उपदेश देने का अधिकार दिलाया।
18. आर्यसमाज ने संसार को बताया की स्त्रियाँ भी ऋषिकायें और संन्यासिनी हो सकती हैं।
19. आर्यसमाज ने "स्त्रियों में आधी आत्मा होती है या आत्मा नहीं होती है" इस बात का न केवल खण्डन किया अपितु समाज में पुरुषों के समानान्तर स्त्रियों की प्रतिष्ठा की।
20. स्त्रियों को दान देने, बेचने और जडवस्तु मानने वालों को आर्यसमाज ने करारा जवाब दिया।
21. आर्यसमाज ने दलित और पीछडे वर्ग की बेटियों के लिए नि:शुल्क शिक्षा व्यवस्था की। उन्हें गुरुकुल में शिक्षित कर मुख्य धारा में जोड़ा।
22. सदियों से चली आ रही मन्दिरों की देवदासी प्रथा का आर्यसमान ने विरोध किया। नारी को दासी नहीं नेत्री बताया।
23. आर्यसमाज ने नारियों के स्वाभिमान को जगाया उसको चौके से निकालकर विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढाया।
24. आर्यसमाज ने स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण करवाया।
25. आर्यसमाज ने स्त्रियों के वेद पढने पर जिह्वा काटने और मन्त्र सुनने पर कान में सीसा पिघलाकर डालने जैसे अत्याचारों से मुक्त करवाया।
26. आर्यसमाज ने परतन्त्र भारत में सर्वप्रथम शूद्रों के लिए विद्यालय खोले और सबके लिए समान पढने की व्यवस्था की।
27. आर्यसमाज ने शूद्रों को वेद पढने का अधिकार दिलाया।
28. आर्यसमाज ने शूद्रों को कर्मणा ब्राह्मण बनाना शुरु किया।
29. आर्यसमाज ने कहा कि शूद्र कुल में उत्पन्न होकर भी कोई मनुष्य ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र भी हो सकता है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। महाभारत काल से 19वीं सदी तक का परिवर्तन काल

भारत के वैभव की लूट सिकन्दर से ईस्ट इण्डिया कम्पनी तक

गतांक से आगे -

यहां से मजबूत भारतवर्ष की कमजोर सत्ताओं का काल शुरू हो चुका था और वेद के गलत अर्थों के चलते पैदा हुए बौद्धमत को मानने से भारत वर्ष अपने सबसे बड़े विनाश की ओर बढ़ चला।

वस्तुत: अहिंसा व्यक्तिगत धर्म है, व्यवहार है, राज्य और सत्ताओं की जरूरत नहीं। न ही वेद में उसे राज्य के लिए उल्लिखित बिन्दुओं में अंकित किया गया था। किन्तु अशोक के बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पश्चात् सब विपरीत दिशाओं में जाने लगे और मंगोल आक्रान्ताओं के आक्रमण शुरू हुए। मोहम्मद गोरी के आक्रमण, महमूद गजनवी के आक्रमणों का दौर शुरू हुआ। उस प्रारंभिक दौर में उनका मुख्य उद्देश्य हमारी विशाल वैभवशाली धन-सम्पदा को लूटना ही था। वे अपनी सेना लेकर आते थे और हमारे बड़े-बड़े मन्दिरों में रखी अकूत दौलत और शहरों-कस्बों को उजाड़ कर उनकी धन-सम्पत्ति लूट कर चले जाते थे। उन्होंने इन लूट के दौरान में अपना कोई मजबूत विरोध न होने की स्थितियों को देखकर यह महसूस कर लिया था कि यहां की राज सत्ताएं काफी कमजोर हो चुकी हैं। इन यात्राओं में उन्होंने उस समय की हमारी सामाजिक कमजोरियों को भी अच्छी प्रकार से समझ लिया था, हमारे जातियों में बंटे समाज की स्थिति देखकर उन्हें यह लोभ आ गया कि क्यों न यहीं का शासक बन कर रहा जाए। हमारे देश पर विदेशी लुटेरों के आक्रमण तो ईसापूर्व ही आरम्भ हो गए थे। ईसापूर्व 365 में युनानी हमलावर सिकन्दर ने पश्चिमी सीमाओं पर हमला किया। ईसापूर्व 160 में मितेन्डर और डैमेण्ट्रीयस, फिर शक और कुषाण आए। इन सभी की मंशा यहां की बेहिसाब धन-दौलत लूटने की ही थी। प्रशासनिक अधिकार की बात करें तो सबसे पहले 711 ईस्वी में अरब शासक मोहम्मद बिन कासिम ने हमारी कमजोरियों का लाभ उठाते हुए सिंध पर अपना अधिकार किया। समय-समय पर अन्य मुस्लिम आक्रांता आते रहे, लूट का माल ले जाते रहे और शासन भी करते रहे, भारत में अपने शासन की सीमाएं बढ़ाते रहे। हमारी राजनैतिक और सामाजिक परिस्थिति यह हो चुकी थी कि हमें कोई फर्क ही नहीं पड़ रहा था कि हमारे ऊपर कोई और शासन कर रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि हमारे अपने ही लोगों की सहायता और गद्दारी से अलग-अलग राजवंशों का हमारे देश पर अधिकार होता चला गया। वर्ष 1526 में इब्राहिम लोदी का भारत पर शासन था। 1526 में बाबर नाम के एक मुगल सेनापति ने इब्राहिम लोदी को हराकर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रखी। और, फिर इसी मुगल राजवंश ने सन् 1857 तक नाम के तौर पर ही सही, मुगल शासक बहादुर शाह जफर ने राज्य किया। हालांकि काफी पूर्व ही सन् 1757 में अंग्रेजों के पास भारत की वास्तविक सत्ता आ चुकी थी फिर भी उन्होंने बादशाह के दर्जे को अपनी सुविधा के लिए बनाए रखा। 1858 में विद्रोह के बाद उन्होंने बादशाह को कालापानी की सजा दे दी। इससे पूरी तरह मुगल साम्राज्य का अन्त हो गया और अंग्रेजों का भारत पर एकछत्र राज्य हो गया।

मुगल सत्ताओं के रहते अंग्रेजी शासन की स्थापना के बारे में चर्चा करें तो जब मुगल शासक जहांगीर का राज्य था, उस समय में जहांगीर ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत में व्यापार करने की अनुमति प्रदान की थी तब उस समय 1615 में एक प्रकार से अंग्रेजी साम्राज्य की नींव अंग्रेजों की कंपनी, ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा रखी गई।

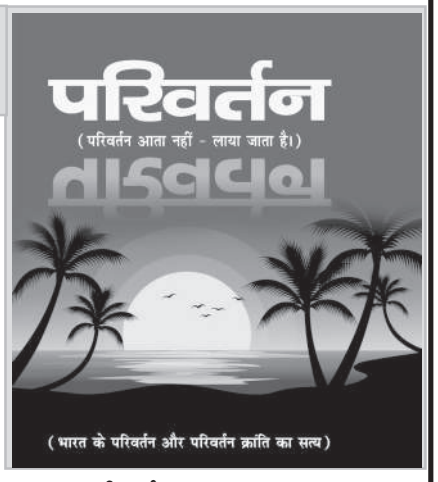

1643 तक शाहजहां आदि बादशाह अंग्रेजों के व्यापार को भारत के अन्य प्रदेशों में बढ़ाने का अधिकार देते रहे। फर्रूखसियर ने उनको और अधिकार दिए। 1767 में उनको बंगाल, बिहार, और उड़ीसा में राजस्व (रिवेन्यू) एकत्र करने के अधिकार प्रदान कर दिए गए और ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से "अंग्रेजी सत्ता" का स्थानीय स्तर पर औपचारिक आरंभ हो गया।

- क्रमश:

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

पृष्ठ 3 का शेष

पथ संचलन निरीक्षण एवं सैनिक अभिवादन स्वीकारते अतिथि महानुभाव, सभा अधिकारी एवं संचालक आर्य वीर दल

समापन एवं दीक्षान्त समारोह में शिविरार्थियों को आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन देने के लिए मंचस्थ उपस्थित अतिथि एवं सभाओं के अधिकारीगण

उद्बोधन, अतिथियों का सम्मान, अनुभव साझा, गीत प्रस्तुति एवं शिविर में प्राप्त कला-कौशल, मलखम, भाला संचालन का प्रदर्शन

शिविर में आर्य वीर दलं के विभिन्न वर्गों के आर्यवीरों, शिक्षकों, उपशिक्षकों व कार्यकर्ताओं को प्रमाण-पत्र वितरण एवं उपस्थित अभिभावक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में 8 दिवसीय स्वाध्याय शिविर- गुरुकुल पौंधा देहरादून में सोल्लास संपन्न

महर्षि कृत पंचमहायज्ञ विधि के गहन स्वाध्याय से लाभान्वित हुए हर आयुवर्ग के शिविरार्थी

200वें जयंती एवं 150वें आर्य समाज स्थापना वर्ष के आयोजनों की श्रंखला में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में श्रीमद्दयानन्द, आर्ष ज्योर्तिमठ गुरुकुल पौंधा देहरादून के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर 23 से 30 मई 2025 तक स्वाध्याय शिविर संपन्न हुआ। स्वाध्याय शिविर का मुख्य विषय महर्षि दयानन्द कृत "पंच महायज्ञ विधि'' ग्रंथ का स्वाध्याय आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक, प्राचार्य गुरुकुल होशंगाबाद, मध्यप्रदेश के निर्देशन में हुआ। आचार्य जी ने ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) को आत्मा व परमात्मा के मिलन की स्थिति बताते हुए सन्ध्या उपासना की तार्किक व्याख्या की। याज्ञिक जी ने देवयज्ञ की व्याख्या करते हुए कहा कि मनुष्य का जीवन परोपकार के लिए बना है। अत: हमें पृथ्वी अग्नि, जल, वायु, आकाश जैसे प्राकृतिक उपादानों की कृपा प्राप्ति के लिए यज्ञ करना चाहिए। 'पितृ यज्ञ' अर्थात माता-पिता को वाणी से, भोजन से वस्त्र से तथा उनकी वेद संबंधी आज्ञाओं का पालन करना ही पितृयज्ञ कहलाता है। बैलिवश्य यज्ञ' भोजन पकाते हुए अनजाने में होने वाली हिंसा से बचने हेतु प्रायश्चित आहुतियों एवं गाय, भैंस, चिड़ियों आदि के लिए पहली रोटी निकालना, अन्न के दाने डालना बलिवैश्य यज्ञ कहलाता है। विशेष रूप से जीवों, पौधों के लिए दान स्वरूप देना। 'अतिथि यज्ञ' का विवेचन करते हुए। उपदेश दिया कि विद्वान साधु संन्यासी, मित्र रिश्तेदार बहन-बेटी तथा जरूरतमंद का आदर सत्कार अतिथि यज्ञ कहलाता है। हमें उपरोक्त दिशा निर्देशित पांचो यज्ञों को मन एवं वचन से करना चाहिए।

के, विभिन्न प्रांतों से स्वाध्याय प्रेमी इस शिविर में उपस्थित हुए, जैसे सुमन आर्य (पंजाब), जयश्री जुमेड़ (महाराष्ट्र), भावना राणा (हरिद्वार), ईश्वर सैनी बहादुर गढ़, विमला देवी कोटकासिम, रामेश्वर दयाल आर्य (राज.) उदयवीर, ओम प्रकाश, प्रेरणा आर्या (ऊप्र॰), देवेन्द्र सचदेवा, माया देवी, बवीता सैनी, धनपति, गीता झा (दिल्ली)। रात्रिकालीन सत्संग में विशेष सहयोग दिया, रजत जयन्ती समारोह में एक सत्र का नाम स्वाध्याय सम्मेलन रख गया। इस अवसर पर विनय आर्य महामंत्री, वीरेन्द्र सरदाना मंत्री, सुखवीर आर्य मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि एवं सतीश चड्डा महांमत्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, स्वामी प्रणवानंद, आ॰ धनंजय ने शिविरार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये, इस सत्र का संयोजक अजीत आर्य

इस अवसर पर दिल्ली एवं अन्य राज्यों की आर्य समाजों के अधिकारी एवं सदस्य सम्मिलित हुए यथा धर्मपाल आर्य, बाबू जाल, ब्रह्म प्रकाश उपप्रधान (राजनगर), राजवती धामा उप्रधान, वीरेन्द्र सोलंकी उपमंत्री, लोकराम आर्य, ओमदत्त पांचाल प्रचार मंत्री (शाहबाद, मो.पुर,) नीरज मंत्री, (सी-3 जनकपुरी), विक्रम सिंह आर्य, मंत्री, जोधपुर, बलवंत सिंह निडर मंत्री, हनुमानगढ़ (राजस्थान) भारत में निर्मला दलाल, राजवती धामा, संतोष सोंलकी, राजवाला सोलंकी, उषा, नीलम सेठी, शकुन्तला सेनी, शांति सैनी, ओमपाल, सुधीर गुप्ता, सूरज भान डागर ने मधुर भजन गाए, सभी मातांए लम्बे समय से दिल्ली सभा के इस प्रकल्प से जुड़ी हैं। कृष्ण योगाचार्य ने प्रात: कालीन वेला में योगासन करवाए, जिनकों सभी सराहा।

सतीश चड्डा अध्यक्ष स्वाध्याय शिविर ने बैनर, स्लाइड, प्रमाण-पत्र आदि व सह संयोजक डाँ. मुकेश आर्य को बनाया गया। विनय आर्य जी ने अपने मार्मिक उद्बोद्धन में वैदिक विद्वानों की पुस्तकों के अध्ययन की बात कही। साहित्य वितरण का सभी से आग्रह किया और स्वाध्याय से होने वाले लाभ भी बताये। गुरुकुलों में छात्रों के दाखिलों पर विचार रखे एवं गुरुकुलों को प्रत्येक दृष्टि से मजबूती प्रदान करने बात भी कही।

- डॉ. मुकेश आर्य, संयोजक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज हमेशा से पर्यावरण संरक्षण और संवर्द्धन के लिए कार्य करता रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 5 जून 2025 को पर्यावरण दिवस सभा के संवर्धकों द्वारा दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञों का आयोजन किया गया। यूँ तो आर्य समाजों में दैनिक, साप्ताहिक और समय-समय पर विशेष यज्ञों के आयोजन होते ही हैं लेकिन इस अवसर पर दिल्ली में विभिन्न स्थानों, घरों में एवं सार्वजनिक स्थलों पर वृक्षारोपण और यज्ञों के आयोजन संपन्न हुए।

आर्य समाज वेद मंदिर सी पी ब्लॉक पीतम पुरा नई दिल्ली में द्वारा

11 दिवसीय बाल चरित्र निर्माण शिविर संपन्न

आर्य समाज वेद मंदिर सी पी ब्लाक मौर्य एंक्लेव पीतमपुरा द्वारा 22 मई से 1 जून, 2025 तक 11 दिवसीय बाल चरित्र निर्माण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों ने ध्यान, योग, आसन तथा प्रणायाम की शिक्षा ली। इसके साथ ही व्याहारिक ज्ञान, नैतिक शिक्षा तथा संध्या, यज्ञ, श्लोक इत्यादि अर्थ सहित सिखाए गए। इस कार्य को सफल बनाने में आर्य समाज के पुरोहित, सदस्या श्रीमती रेणुका ठुकराल, सेवक जगवानी तथा प्रधान श्री व्रतपाल भगत का कुशल मार्गदर्शन मिला। रविवार 1 जून को समापन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

श्रीमती रेणुका जी ने अपनी ओर से हर बच्चे को एक-एक तुलसी का पौधा तथा श्रीमती अनुज जी ने एक एक बैग पुरस्कार प्रदान किया। कार्यक्रम के समापन समारोह में क्षेत्र के निगम पार्षद श्री अमित नागपाल जी ने बच्चों को पुरस्कृत कर उनका उत्साहवर्धन किया। - *सोहन लाल आर्य, मंत्री*

साप्ताहिक स्वाध्याय

जीवन का अन्तिम दृश्य

गतांक से आगे–

जो लोग आर्यसमाज के प्रजा सत्तात्मक संगठन के गुणों या दोषों के लिए दूसरों को उत्तरदाता ठहराना चाहते हैं, वे महर्षि दयानन्द के साथ अन्याय करते हैं। शायद वे लोग चाहते हैं कि किसी दूसरे व्यक्ति को उत्तरदाता ठहरा देने से उन्हें समालोचना करने की स्वाधीनता मिल जायगी और महर्षि दयानन्द के ऊपर दोष नहीं लगेगा; परन्तु उनकी महर्षि के प्रति यह भक्ति वस्तुतः उनसे ऋषि पर बहुत बड़ा दोषारोपण करा देती है। उनके कथन का यही तात्पर्य हो सकता है कि महर्षि दयानन्द अपनी कोई सम्मति नहीं रखते थे–आर्यसमाज के संगठन जैसे आवश्यक विषय पर उन्होंने किसी दूसरे की तान पर ही गा दिया है, स्वतन्त्र बुद्धि का प्रयोग नहीं किया। जिस पुरुष ने संसार की परवाह न करके एक रास्ता निकाल दिया है, उसके सम्बन्ध में यह कहना कि उसने किसी दूसरे के कहने से आर्यसमाज का स्थायी संगठन बना दिया है, लांछन लगाने से कम नहीं है। सम्मति तो सब लोग लेते हैं, परन्तु चुनाव अपने आधीन होना चाहिए। जो आदमी महर्षि के चरित्र को ध्यान से पढ़ेगा, वह निश्चयपूर्वक यह कह उठेगा कि हरेक विषय में इतिकर्तव्यता का चुनाव महर्षि दयानन्द अपनी मर्जी से किया करते थे।

परन्तु महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज का जो संगठन बनाया है, क्या वह सचमुच इस योग्य है कि किसी दूसरे को उसके बनाने का अपराधी ठहराया जाय? क्या वह आर्यसमाज की उन्नति में बाधक हुआ है?

लेखक की राय है कि आर्यसमाज का जो संगठन महर्षि दयानन्द ने बनाया है, वह बहुत उत्तम है। उससे भारतवर्ष की ही नहीं, अन्य देशों की धर्मिक तथा राज्य संस्थाएं भी शिक्षा ले सकती हैं। समय के अनुसार जो छोटे–मोटे परिवर्तन आवश्यक होते जायं उन्हें कर डाला जाय, परन्तु प्रधान अंशों में वर्तमान संगठन श्रेष्ठ है।

आर्यसमाज के संगठन की श्रेष्ठता पर लिखने से पूर्व आवश्यक प्रतीत होता है कि कुछ शब्द इस विषय पर लिखे जायं कि आर्यसमाज क्या वस्तु है? क्या वैदिकधर्मी मात्रा के समूह का नाम आर्यसमाज है? या वैदिक धर्म के प्रचार के लिए जो सोसाइटी बनाई गई है वह आर्यसमाज है? दोनों प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट हैं। यह आवश्यक नहीं कि वैदिकधर्मी मात्रा आर्यसमाज के सभ्य हों; क्योंकि आर्यसमाज के सभ्य होने के लिए चन्दे की शर्त लाजमी है। संन्यासी चन्दा नहीं दे सकते और न गरीब लोग दे सकते हैं, ऐसी दशा में वे लोग सामान्यतया आर्यसमाज के सभासद् नहीं बन सकते। तब क्या वे वैदिकधर्मी नहीं हैं? वे वैदिक धर्मी अवश्य हैं। आर्यसमाज के बाहर रहते हुए भी वे वैदिकधर्मी हैं और हमेशा रहेंगे। आर्यजगत् आर्यसमाज तक परिमित नहीं है। आर्यसमाज तो उन लोगों की संस्था है जो वैदिक धर्म के प्रचार की अभिलाषा रहते हुए संगठन में शामिल होते हैं।

दृष्टान्त से यह विषय और अधिक स्पष्ट हो जाता है। एक शहर में तीन लाख निवासी निवास करते हैं। उनमें से वोट देने के अधिकारी केवल 25 हजार हैं और उनमें से भी म्युनिसिपल कमेटी के चुनाव में केवल 10 हजार निवासी भाग लेते हैं; ऐसी दशा में क्या 10 हजार ही शहर के निवासी समझे जाएंगे? उत्तर 'हां' में नहीं हो सकता। उसी प्रकार आर्यजगत् आर्यसमाज से बहुत बड़ा है। आर्यसमाज शब्द भी दो अभिप्रायों से प्रयुक्त होता है। सामान्यतः हरेक वैदिक धर्मी, महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं को स्वीकार करनेवाला हरेक व्यक्ति आर्य समाजी माना जाता है। आर्यजगत् के लिए आर्यसमाज शब्द का प्रयोग होता है। यह विस्तृत आर्यसमाज है।

आर्यसमाज एक निश्चित संगठन भी है। यह आवश्यक नहीं कि हर एक वैदिक धर्मी आर्यसमाज में सम्मिलित भी हो। आर्यसमाज उन वैदिक धर्मियों का संघ है, जो वैदिक शिक्षाओं के प्रचार और रक्षणार्थ इकट्ठे होते हैं। वैदिक धर्मियों

का संघ आर्यसमाज से बहुत बड़ा है। यदि आर्यजगत् और आर्यसमाज के भेद को ठीक प्रकार से समझ लें तो यह आक्षेप करने का अवसर नहीं रहता कि संगठन ने आर्यसमाज को संकुचित बना दिया है। संकुचित बनाने का दोष आर्यसमाज के नियमों के बनानेवाले के सिर नहीं मढ़ा जा सकता। यह दोष तो हम लोगों का है,

–क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी 'महर्षि दयानन्द' से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Last scene of Life

Even a historian of Arya Samaj has considered the present organization of Arya Samaj to be the root of many present troubles.

It has to be accepted that the present organization of Arya Samaj is new in the religious world. Before this, the democratic system of governance was not used in any religious society with such completeness. Almost all religions have been under some supernatural influence. Roman Catholics consider the Pope of Rome as their religious leader. The eyes of Islam used to be towards Khalifa earlier – now it is towards Mecca. No public has a hand in the selection of Buddhist monks. Although the Protestant-Christian Church often relies on political authority, it has to be admitted that the common Christians have no hand in the election of the main men of the Protestant Church. Representation of public opinion in the matter of religion was accepted only at one place before Rishi Dayanand. The caliphs who followed the death of Hazrat Muhammad were elected by the general public. But soon the sword, which till now was considered to be the last means of deciding the truth in the conflict between Islam and other religions, was also accepted as the final proof for deciding the authority of the victory of Islam. The democratic form of Islam was crushed in the clash between Hazrat Ali and the Umayyad dynasty.

Democraticism in politics was also new for India. Till now it was not fully used at any place. The British government was very careful and at some places it was accepting a little bit of Prajamat. Moreover, even in England itself there was no complete republican rule. The king there is not elected by the subjects, he is elected by accident. The boy who is born in the king's house, he later becomes entitled to the throne. It should be called a wonderful miracle of Rishi Dayanand's intelligence that he used that principle with completeness in the field of religion, which other religions, let alone politics, used to be afraid to adopt. Everyone used to believe, but could not put it into practice. It was believed that the teaching of centuries is needed to run a democratic government. What to say about Indians, even people more educated than them could not use it. Rishi Dayanand not only understood that theory very well, but also converted it into action by making it practical and did all this while being ignorant of English and Western education. If anyone has any doubts about the clairvoyance of the sage, then only one example can clear his doubts.

Those who want to hold others responsible for the merits or demerits of the democratic organization of Aryasamaj, do injustice to Rishi Dayanand. Perhaps they want that by appointing another person as the responsible, they will get the freedom to criticize and Rishi Dayanand will not be blamed _ but their admonition towards the sage actually makes them blame the sage a lot. The meaning of his statement could be that Rishi Dayanand did not express any opinion of his own – on an important subject like the organization of Aryasamaj, he sang on someone else's tune, did not use independent intelligence.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

12वीं पास वंचित छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति
Pragati
भारत में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक छात्रों को आर्य समाज द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति के बारे में पूरी जानकारी (इंजीनियरिंग/मेडिकल/कानून/रक्षा आदि)
aryapragati.com
9311721172

पृष्ठ 2 का शेष

ऐसे कत्ल समाज पर धब्बा है

होटल स्टाफ ने कहा, "वह अकेली आई थी, साथ कोई नहीं था", पर सोनम बता रही थी कि उसे बदमाश उठा ले गए और एक कमरे में बंद किया। और आज यहाँ इस ढाबे के पास छोड़ दिया।

सोनम की कहानी बिलकुल अलग थी लेकिन मेघालय पुलिस की जांच की कहानी कुछ और ही बयान कर रही थी। पकड़े गए तीनों किलर की कहानी बता रही थी कि सोनम और राजा की शादी नहीं बल्कि साजिश थी और इस साजिश में एक नाम निकलकर सामने आया राज कुशवाहा।

राज, जो उम्र में सोनम से 5 साल छोटा बताया जा रहा है। सोनम रघुवंशी के पिता के पास प्लाईवुड का काम था। वहीं, आने-जाने के दौरान ही सोनम और राज की मुलाकात हुई। आरोप लग रहा है कि पहले दोनों के बीच दोस्ती हुई, फिर धीरे-धीरे मोहब्बत। लेकिन इसी बीच सोनम की शादी हो गई राजा से। मगर मोहब्बत इतनी गहरी थी कि वह उसे छोड़ नहीं पाई। या कहो सोनम राज को अपने दिल से नहीं निकाल पाई। वह अपने कथित प्रेमी को पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार थी।

राज ने तीन किलर हायर किए, उन्हें 50 हजार रुपये और फोन दिया। राज इंदौर में ही रहा, यहीं से डील करता रहा ताकि उसकी लोकेशन इंदौर की ही बनी रहे। सोनम को लेकर मेघालय पुलिस चली गई, लेकिन अभी भी कहानी और सवाल बाकी हैं। सवाल है कि सोनम इतने दिन तक थी कहां? सोनम का कहना है कि उसे बंधक बनाकर रखा गया था और बाद में गाड़ी में बिठाकर गाजीपुर के ढाबे पर छोड़ दिया। कितने अच्छे अपहरणकर्ता थे जो मेघालय से लाकर गाजीपुर छोड़ गए बिना कुछ लिए।

यहाँ गौर करने लायक है कि जिस जगह से राजा का शव बरामद किया गया, उसी जगह सोनम का एक कपड़ा भी मिला। तो अगर सोनम के साथ किसी तरह की मारपीट या जोर-जबरदस्ती की गई थी, तो उसके शरीर पर चोट के निशान क्यों नहीं हैं? सोनम की गिरफ्तारी के बाद उसका मेडिकल कराया गया, लेकिन अब तक ऐसी कोई जानकारी नहीं आई है कि सोनम चोटिल है। अब सवाल उठता है कि क्या वाकई ये सिर्फ एक प्रेम कहानी थी जो हत्या में बदल गई? या इसके पीछे और भी कुछ है जो अब तक सामने नहीं आया? पुलिस जांच जारी है। लेकिन एक बात तय है कि अंधी और अर्थहीन मोहब्बत जब हदें पार करती है, तो उसका अंजाम सिर्फ दिल टूटना नहीं, किसी की जान जाना भी हो सकता है। भले ही लोग कहें कि इश्क और जंग में सब जायज है, लेकिन न जंग में यहूदी होलोकास्ट जायज है और न राजा रघुवंशी की हत्या। बल्कि ऐसे कत्ल समाज पर धब्बा हैं।**-संपादक**

पृष्ठ 3 का शेष

30. आर्यसमाज ने कथित रूप से शूद्र कुल में उत्पन्न हुए बच्चों को गुरुकुल में पढाना प्रारम्भ किया।
31. आर्यसमाज ने कथित रूप से दलित शूद्र और नीचली जाति के कुल में उत्पन्न हुए बच्चों को वेद पढ़ाना प्रारम्भ किया।
32. आर्यसमाज ने निर्धन बच्चों के लिए गुरुकुल में निशुल्क शिक्षा प्रारम्भ की।
33. आर्यसमाज ने छुआछूत को मिटाने के लिए बहुत संघर्ष किया।
34. आर्यसमाज ने अस्पृश्यता के कलंक धोने के लिए अनेक सामाजिक लडाई लडी।
35. आर्यसमाज ने शूद्रों के अतिरिक्त गैर ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए बच्चों को भी वेद न पढ़ने के अभिशप्त से मुक्त करवाया।
36. आर्यसमाज ने दबे कुचले लोगों को शिक्षा के साथ सम्मान दिलवाया।
37. आर्यसमाज ने वेद के बंद कपाटों को संपूर्ण मानव जाति के लिए खोल दिया।
38. आर्य समाज ने दलित उत्थान के लिए उनको उत्पीड़न से बचाने के लिए बहुत सी योजनाएं चलाई।
39. आर्यसमाज ने दलितों को मुख्य धारा में लाने के लिए उनको पढ़ाना शुरू किया।
40. आर्यसमाज ने दलितों को ईसाइयों के कुचक्र से बचाया।
41. आर्यसमाज ने दलितों एवं पिछड़ों को मुस्लिम धर्मान्तरण से बचाया।
42. आर्यसमाज ने दलितों के लिए समान शिक्षा और समान कर्मकांड करने की व्यवस्था की।
43. आर्य समाज ने दलितों को भारतीय समाज का अभिन्न अंग बताया।
44. आर्यसमाज ने बताया कि मनु स्त्रियों और दलितों के विरोधी नहीं है।
45. आर्यसमाज ने मनुस्मृति को वेदों के अनुकूल बताया।
46. आर्यसमाज ने वर्ण व्यवस्था को कर्म पर आधारित बताया।
47. आर्यसमाज में जन्मना वर्ण व्यवस्था को वेद विरुद्ध बताया।
48. आर्यसमाज ने कर्मणा व्यवस्था को अपने गुरुकुलों पर और आर्य समाज पर लागू करके उसको वेद आधारित सिद्ध किया।
49. आर्यसमाज ने जातिवाद का पुरजोर विरोध किया।
50. आर्यसमाज ने विदेशियों द्वारा दिए गए 'हिन्दू' शब्द की जगह भारतीय मूल 'आर्य' शब्द की वकालत की।

- क्रमशः

प्रथम पृष्ठ का शेष

परेड निरीक्षण, सैनिक अभिवादन, प्रतिज्ञा

आर्य नेता श्री सत्यानंद आर्य जी एवं श्री सुरेंद्र रैली जी ने परेड का निरीक्षण किया, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने सैनिक अभिवादन स्वीकार किया तथा श्री एस के शर्मा जी ने शिरार्थियों को मानव सेवा, परोपकार, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने का विधिवत संकल्प कराया। आपने अपने उद्बोधन में आर्य वीरों को संदेश देते हुए कहा की आहार, व्यवहार और आचरण की जो शिक्षा आपने यहां पर प्राप्त की है उसको जीवन भर निभाने से आपका और समाज का कल्याण होगा।

महानुभावों के प्रेरक उद्बोधन

श्री योगानंद शास्त्री जी आयोजकों को बधाई देते हुए हुए माता पिता, गुरु शिष्य परंपरा का आदर्श शिवरार्थियों को समझाया, देश के प्राचीन गौरव, अखंड भारत की परिधि, सोने की चिड़िया भारत की तस्वीर प्रस्तुत करते हुए उन्होंने बताया कि वर्तमान में भारत की विश्व व्यापार में 1.5 प्रतिशत की हिस्सेदारी है। आपने अमर वीर बलिदानी, शहीद भगत सिंह, दुर्गा भाभी, राम प्रसाद बिस्मिल, लाहिड़ी, असफाक उल्ला खां आदि की निष्ठा और शौर्य का वर्णन करते हुए युवाओं को देशभक्ति और वीरता के पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मुख्यवक्ता के रूप में श्री विनय आर्य जी ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि इस अवसर पर हम आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प करते हैं। आर्य वीर दल पूरी तरह से सक्षम संगठन है, विपरीत परिस्थितियों में अनुकूलता और संतुलन बनाकर सफलता प्राप्त करना इसकी विशेषता है, सभी आर्य समाजों में आर्य वीर दल की शाखाओं को स्थापित करें, आर्य समाजों के अधिकारी इस महत्वपूर्ण कार्य में अग्रिम भूमिका निभाएं। आपने आगामी 9,10,11,12 अक्टूबर 2025 में विशाल अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की तैयारी करने का आह्वान करते हुए आर्य वीर दल के अधिकारियों और शिवरार्थियों को शुभकामनाएं और बधाई दी।

श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी का आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित सभी शिवरार्थियों के लिए शुभकामना और आशीर्वाद पूर्ण संदेश का वाचन करते हुए श्री हर्ष प्रिय आर्य जी ने बताया कि खराब मौसम और अधिक ट्रैफिक जाम के कारण श्री आर्य जी कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो पाए, अतः उन्होंने अपनी बहुत बहुत शुभकामनाएं और आशीर्वाद लिखित में प्रदान किया है।

भव्य व्यायाम प्रदर्शन से अभिभूत हुए आर्यजन

आर्य वीरों ने अपने पूरी वेशभूषा में अनुशासित और व्यवस्थित होकर जब व्यायाम प्रदर्शन करना आरंभ किया तो ऐसा लगा मानो जैसे वर्षों वर्ष अभ्यास करके देश के जांबाज सैनिक राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस पर अपनी वीरता और शौर्य का प्रदर्शन कर रहे हैं। आर्य वीरों के द्वारा सर्वांग सुन्दर व्यायाम, योगासन, लाठी, भाला, तलवार, मलखम और सैनिक परेड आदि का प्रदर्शन देखकर उपस्थित जनसमूह गदगद हो गया। इस अवसर पर विशेष रूप से आपदा प्रबंधन, राहत बचाव कार्य का प्रशिक्षण प्राप्त शिवरार्थियों ने भूकंप, बाढ़, गैस सिलेंडर फटने जैसी घटनाओं पर नियंत्रण पाने की विधि का प्रदर्शन बहुत ही कुशलतापूर्वक कर यह निश्चित किया कि ऐसे विषम हालातों में किस प्रकार राहत बचाव के कार्य किए जा सकते हैं। सभी आर्यजनों ने तालियां बजाकर खूब प्रोत्साहन दिया।

शिविर के अनुभव

आज सभी शिवरार्थी अत्यंत गौरव का अनुभव कर रहे थे, सभी के मुखमंडल आत्मविश्वास से चमक रहे थे। शिवरार्थी जयंत ने अपने 10 दिनों के प्रशिक्षण के अनुभव को सबके साथ बांटते हुए बताया कि हमने खेल खेल में जो शिक्षा पाई है वह अपने आप में अत्यंत कल्याण कारी है, पहले दो दिन तो मेरा यहां मन नहीं लगा लेकिन अब यहां से जाने का मन नहीं कर रहा है। यहां के शिक्षक और संपूर्ण व्यवस्थाएं बहुत अच्छी लगी, मैं हर बार शिविर में आऊंगा और अपने क्षेत्र में शाखा भी लगाऊंगा।

अतिथियों का सम्मान

इस अवसर पर उपस्थित समस्त महानुभावों का आर्यवीर दल के अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं द्वारा सैनिक सम्मान किया गया तथा श्री योगानंद शास्त्री, श्री एस के शर्मा, स्कूल की प्रधानाचार्या, सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, श्री सुरेंद्र रैली, अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ के शिक्षकों, आर्य वीर दल के शिक्षकों, कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह, प्रमाण पत्र इत्यादि से सम्मानित किया गया। शिवरार्थियों में आर्य कुमार श्रेणी, आर्य वर्ग श्रेणी, बाल आर्य वीर श्रेणी, आर्य वीर संकल्प श्रेणी, आर्य वीर श्रेणी में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार और प्रमाण पत्र प्रदान किए गए, अनुशासन में विवेक भट्ट और सर्वश्रेष्ठ शिवरार्थी रोहन सिब्बल को पुरस्कृत किया गया। शिक्षण, सह शिक्षक और कार्यकर्ताओं को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया। मंच संचालन श्री बृहस्पति आर्य, महामंत्री ने कुशलतापूर्वक किया, श्री जगवीर आर्य संचालक, श्री सुन्दर आर्य, कोषाध्यक्ष और सभी अधिकारियों ने उपस्थित अतिथियों, आर्यजनों, दानदाताओं, डी.ए.वी. स्कूल के अधिकारियों का आभार व्यक्त किया।

- बृहस्पति आर्य, महामन्त्री

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

सोमवार 9 जून, 2025 से रविवार 15 जून, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 12-13-14/06/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 जून, 2025

ओ३म्

आर्य समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रकल्प

छोटे बच्चों को शिक्षा

के साथ संस्कार देने हेतु

बालवाड़ी केन्द्रों की स्थापना

जो आर्यसमाजें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के साथ सहभागी बनकर बच्चों को संस्कार एवं सन्मार्ग प्रदान करने के इच्छुक हैं, कृपया वे अपने आर्यसमाज मन्दिरों में बालवाड़ी केन्द्रों की स्थापना करने तथा इस प्रकल्प सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

संपर्क सूत्र : 9311721172

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द 200वीं जयन्ती एवं
150वें आर्यसमाज स्थापना वर्ष
के आयोजनों के अन्तर्गत

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर द्वारा

जम्मू-कश्मीर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

19-20 जुलाई, 2025 (शनिवार-रविवार)

-: स्थान :-
बाबा जित्तो सभागार,
शेर-ए-कश्मीर विश्वविद्यालय, चट्ठा, जम्मू

आप सब सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं। कृपया अवश्य ही पधारकर महासम्मेलन को सफल बनाने में सहयोग करें

निवेदक

नरेन्द्र त्रेहन	राजीव सेठी	योगेश गुप्ता
प्रधान, 9419182941	मन्त्री, 9419182553	कोषाध्यक्ष, 7006579919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह